4 जीव! तैं मूढ़पना कित पायो...

जीव! तैं मूढ़पना कित पायो...
सब जग स्वारथ को चाहत है,
स्वारथ तोहि न भायो।।जीव.।।टेक।।
अशुचि अचेत दुष्ट तनमांही,
कहा जान विरमायो।
परम अतिन्द्री निजसुख हरिकै,
विषय रोग लपटायो।। जीव.।।१।।

चेतन नाम भयो जड़ काहे,
अपनो नाम गमायो।
तीन लोक को राज छांडिके,
भीख मांग न लजायो।। जीव.।।२।।

मूढ़पना मिथ्या जब छूटै,
तब तू संत कहायो।
'द्यानत' सुख अनन्त शिव विलसो,
यों सद्गुरु बतलायो।। जीव.।।३।।

हे जीव! तुम अज्ञानी क्यों हो रहे हो?, सारा जगत अपने स्वार्थ से ही तुमसे स्नेह करता हैं। फिर भी तुम्हें अपना आत्मा का सुख क्यों नही सुहाता?।।टेक।।

हे जीव! इस अपवित्र और अचेतन शत्रु के समान शरीर में क्यो रमण कर रहे हो? तुम अपने परम अतीन्द्रिय आत्मसुख को भुलकर क्यों विषय भोगों में लीन हो रहे हो?।।१।।

हे प्राणी! तुम्हारा नाम चेतन है तो भी तुम क्यों अचेतन की तरह होकर अपना चेतन नाम के मान को खो रहे हो, तुम तीन लोक के सम्राट सिद्ध स्वरुपी राज को छोडकर विषयों से सुख की भीख क्यों मांग रहे हो?।।२।।

कवि द्यानतरायजी कहते हैं कि जब तुम मिथ्यात्व के दोष को छोड दोगे तभी जगत में पूज्यनीय होगें और मोक्ष का अनन्त सुख प्राप्त कर पाओगें। इस प्रकार का मार्ग सद्गुरु अर्थात् दिगम्बर मुनिराज ने बताया हैं।।३।।